वेद कितने प्राचीन हैं ?

अभी पिछले ही दिनों की बात है, अमेरिका से एक गोराङ्गी-महिला दिल्ली विश्वविद्यालय में पधारी थीं जिनका विषय था- 'वेदों की प्राचीनता।' उनके सन्मान में अधिकारियों ने जलपान का आयोजन भी किया था। संयोगवश, मैं भी इस कार्यक्रम में उपस्थित था। उनसे मेरा परिचय हुआ। मैंने पूछाँ - मैडम! आपका नाम ?' मिस मोनिला, मैं वेदों के घर भारतवर्ष में वेदों पर रिसर्च करने आई हूँ।' मैं बोला-मैं आपको शोध-कार्य में क्या मार्ग-दर्शन कर सकता हूँ ? '' उनका उत्तर था- 'आप वेद कितने पुराने हैं' इस विषय पर कुछ बताइयेगा।

मैडम! वेदों की प्राचीनता जानने के लिये पहले यह जानना जरूरी हैं कि वेद क्या हैं ? वैसे तो वेद ईश्वरीय ज्ञान की वे चार पुस्तकें हैं जो कि सृष्टि बनाते समय ईश्वर ने इस सृष्टि के प्रथम-मनुष्य वैवस्वत-मनु को प्रदान की थीं। अतः यह निर्विवाद रूप से सिद्ध हो चुका है कि यह सृष्टि जितनी पुरानी है, मनुष्य की उत्पत्ति जितनी पुरानी है, वेद भी उतने ही पुराने हैं। वैदिक साहित्य द्वारा अच्छा यही है कि हम पहले वेदो के महत्व पर कुछ चर्चा कर लें। मनु कहते हैं -

१. **''धर्म जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः ।।''**

मनु. २/१३

अर्थात : वेद धर्म अर्थात् कर्त्तव्याकर्तव्य के जिज्ञासुओं के लिये सबसे बढ़कर प्रमाण हैं।

२. **''वेदोऽखिलो धर्ममूलं स्मृतिशीले च तद्विदाम।''**

मनु. २/६

अर्थात : वेद सब धर्म अर्थात कर्त्तव्यार्कत्तव्य विषय के मूल हैं, वेद ज्ञाताओं द्वारा रची गयी स्मृतियों और वेद के ज्ञाताओं के शील अर्थात आचरण से भी धर्म का ज्ञान होता है।

३. **''सेनापत्यं च राज्यं च दण्डनेतृत्वमेव च।**
सर्वलोकाधिपत्यं च वेदशास्त्रविदर्हति ।।''

मनु. १२/१००

अर्थात :- जो व्यक्ति वेदशास्त्र को भली भांति समझ लेता है वह सेनाओं का संचालक तथा संगठन कर सकता है। राज्यों का संगठन व संचालन कर सकता है। न्यायव्यवस्था का संचालन कर सकता है और सारे विश्व के चक्रवर्ती राज्य का भी संचालन कर सकता है।

४. **''तस्मादेतत् परं मन्ये।''** मनु. १२/८८

अर्थात : मनु तो वेदशास्त्र के अध्ययन से बढ़कर मनुष्य का और कोई कर्तव्य ही नहीं मानते।

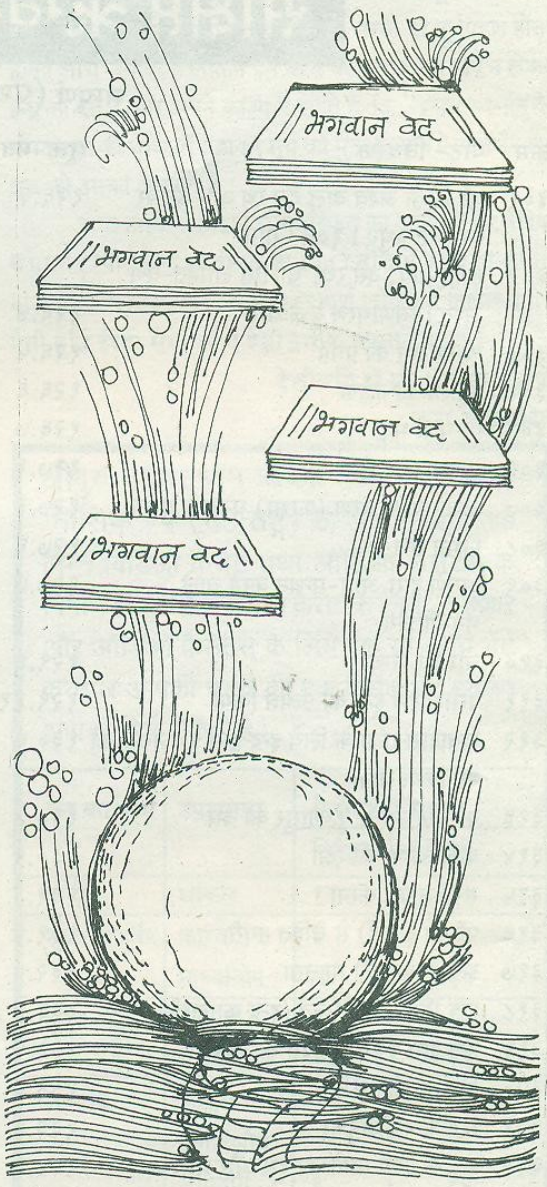

५ **''न वेदशास्त्रादन्यत्तु किञ्चिच्छास्त्रं हि विद्यते।**
निःसृतं सर्वशास्त्रं तु वेदशास्त्रात्सनातनात् ।।''

वेदों का यथार्थ स्वरूप, पृष्ठ ३

अर्थात् : वेदशास्त्र से बढकर दूसरा शास्त्र नहीं है अन्य सब शास्त्र सनातन वेद से ही निकले हैं।

६. **''वेदो धर्ममूलम्।''** गो. घ.सू. १.१.१.

अर्थात : वेद ही धर्म का मूल हैं।

७. ''**उपदिष्टो धर्मः प्रतिवेदनम्।**'' बो.ध.सू. १.१.१.

अर्थात् : प्रत्येक वेद में धर्म का ही उपदेश किया गया है।

८. ''**वेदाश्च।**'' आ.घ.सू.

अर्थात् : आपस्तम्भ धर्मसूत्र भी वेद को ही धर्म विषयक ज्ञान में प्रमाण मानता है।

९. ''**(क) सामर्ग्यजुर्वेदास्त्रयी .... एष त्रयीधर्मश्चतुर्णा वर्णानामाश्रमाणां च स्वधर्मस्थापनादौपकारिक : ।।**''

कौट. अधि। अ. ३

(ख) धर्मा धर्मौ त्र्यम्।'' वही १.२.

अर्थात् : राजकुमारों को अन्याय व्यवहारिक विद्याओं को पढाने के साथ साथ त्रयी अर्थात वेद भी आवश्यक रूप से पढाया जाना चाहिये क्योंकि राजा को जनता के लोगों से वर्णाश्रम-धर्म के कर्तव्यों का पालन कराना होता है और वर्णाश्रम के धर्मों अर्थात् कर्त्तव्यों का ज्ञान त्रयी यानी वेद से ही होता है।

वेदों के महत्व पर मेरे द्वारा प्रवचित इन व्याक्याँशों को सुनकर मिस मोनिला अवाक रह गयीं। उनकी उत्कंठा वेदों की प्राचीनता को जानना के लिये उत्फुल्लित हो रही थी इसलिये मैंने कहा- मैडम्! वेदो की प्राचीनता आँग्ल-विद्वान तो जान ही नहीं सकते, कारण यह है कि बे वैदिक-साहित्य को नहीं जानते। वेदों की प्राचीनता केवल वही आर्य-विद्वान जान सकता है जिसकी गति वैदिक -साहित्य में समान हो। मैं आपको कुछ सूत्र देता हूँ, आप उनपर अपना ध्यान केन्द्रित करें। धीरे धीरे आप के अध्ययन का मार्ग अपने आप प्रशस्त हो जायेगा।

वेदों के बाद रचे गये वैदिक-साहित्य की प्राचीनता जाने बिना वेदों की प्राचीनता जानना असम्भव होगा। जिस महा अट्टलिका के उर्ध्व-शिखर को आप छूना चाहतीहैं उस महाअट्टालिका में लगी ईट ईट का इतिहास आपको जानना होगा। केवल छलांग लगाने से उर्ध्व-शिखर तक कोई नहीं पहुँच सकता। मैं आपको कुछ अते-पते बताता हूँ।

।। पहला अता-पता ।।

मैडम! छान्दोग्य उपनिषद में लिखा है -

''**सहोवाच भगवोऽ ध्येमि ऋग्वेदं यजुर्वेदं सामवेदमाथर्वणं चतुर्थ -मितिहासपुराणं पञ्चमं वेदानां वेदं पित्र्यं राशिं दैवं निधिं वाकोवाक्यमेकायनं देवविद्यां ब्रह्मविद्यां भूतविद्यां क्षत्रविद्यां नक्षत्रविद्यां सर्प देवजनविद्यामेतद भगवोऽध्येमि**''

अर्थात् इतनी विद्यायें मैंने पढी हैं। इससे पता चलता है कि इन विद्याओं का अपार-साहित्य उस समय मौजूद था। लेकिन आज उसका पता तक नहीं है।

मैडम्। पहले उस साहित्यसागर के उदय, प्रसार और उसकी विलुप्ति कब हुई, इसका पता लगाइये, तब आगे बढिये।

।। दूसरा अता-पता ।।

गोपथ-ब्राह्मण पूर्वभाग प्रथम प्रपाठक में ओंकार के लिये पूछा गया है कि ''**किं वै व्याकरणम्, शिक्षा का, किमुच्चायन्ति, किं छदः, किं ज्योतिषं, किं निरूक्तं**''? यहाँ एक अति-प्राचीन निरूक्त का भी पता मिल जाता है। इसी प्रकार शिक्षा, व्याकरण, छन्द और ज्योतिष के साहित्य का भी पता मिलता है। यह यास्क का निरूक्त नहीं है। क्योंकि यास्क ने तो अपने निरूक्त में वर्तमान ब्राह्मणों के कई वाक्य उद्घृत किये हैं और लिखा है ''इति ब्राह्मणम्।''

।। तीसरा अता-पता ।।

छान्दोग्योपनिषद् में फिर लिखा मिलता है, कि ''**यद्वै किञ्चन मनुखदत्तभेषजस्य भेषजता या**'' अर्थात् मनु ने जो थोड़ा सा कहा है, वह दवा की भी दवा है। इससे पता चलता है कि मनुस्मृति जिसके आधार पर बलीहै वह मनुविरचित स्मृति कोई बहुत ही प्राचीन पुस्तक थी।

।। चौथा अता-पता ।।

वेदो के अन्तिम भाग वेदांत को ही वेदों का दर्शनिक भाग अर्थात उपनिषद् कहते हैं। उपनिषदों के अनेक श्लोक दूसरे ग्रन्थों से उद्धृत किये गये हैं परन्तु वे ग्रन्थ इस समय कहीं नहीं मिलते। प्रश्नोपनिषद् १/७ में ''**तदेतहचाभ्युक्तम्**'' लिखकर ८ वीं ऋचा लिख दी गई है और ३/११ से आगे का १२ वां, ४/१४ से आगे का ६ वा और ६/५ से आगे का भी ६ ठा श्लोक लिखा है। छन्दोग्य ३/११/१ के आगे का दूसरा, और ३/७/६ के आगे का ''**एते द्वौऋचौ भवतः**'' दो श्लोक हैं। तैत्तिरीय २ में ''**तदेषाभ्युक्ता**'' कहकर आगें का श्लोक और २/५ में ''**एष श्लोको भवति**'' लिखकर आगे का श्लोक लिखा गया है। इसी तरह ३/७ से आगे का ८ वां, ४/८ से आगे का १० वां और ५/११ से आगे का ६ वा श्लोक लिखा है। वृहदारण्यक १/५/२३ से आगे का और ४/४/७ से आगे का श्लोक भी अत्याधिक प्राचीन है। इनके अतिरिक्त शतपथ ब्राह्मण में भी नीचे लिखे पुराने श्लोक आये हैं जैसे :-

तदेष श्लोक : - कां.१० अ. ५ ब्रा. २ कं. १६

श्लोक :- कां. १४ अ. ४ ब्रा. ३ कं. १

अथैष श्लोक : भवति :- कां. १४ अ. ४ ब्रा. ३ कं. ३४

तदप्यैते श्लोका : - कां. ११ ब्रा. ४ कं.५

इसी प्रकार किन्हीं अति-प्राचीन सूत्र, कल्प, ब्राह्मण, व्याकरण, मीमांसा आदि का पता भी ब्राह्मण ग्रन्थों में मिलता है। गोपथ-ब्राह्मण मे लिखा है -

''**सूत्रे सूत्रं ब्राह्मणे ब्राह्मणं श्लोके श्लोकः।** (गो.१/२३)

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वाषु च विभक्तिषु।

वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येत्ति तदव्ययम्। (गो.१/२६)
कबन्धस्याथर्वणस्य पुत्रौ मेधावी मीमांसा कोऽनूचान आस
(गो. २/१०)
मंत्रकल्पब्राह्मणानामप्रयोगात्। (गो. २/२/५)
तदपि श्लोकाः। (गो. २/२/५)
सन्ति चैषा समानाः मन्त्राः। कल्पाश्च ब्राह्मणाति च
(गो. २/२/५)

मैडम्! अब इन प्रमाणों से आपको यह देखना चाहिये कि यह सारा-साहित्य कितना प्राचीन हो सकता है?

॥ व्याख्या ॥

सच तो यह है कि इस साहित्य से पूर्व भी मन्त्र द्रष्टा ऋषियों का इतिहास उपलब्ध है। गोपथ-ब्राह्मण में जहाँ "सावित्री उपनिषद" का वर्णन किया गया है, वहाँ पर ब्राह्मणों के पूर्व साहित्य का एक श्लोक उद्धृत किया गया है। तो भी सावित्रीविद्या को परम्परा से चलाने वाले, एक ऋषि ने उस श्लोक का खण्डन करके सावित्री का सत्यार्थ समझाया है। इससे पता चलता है कि वर्तमान ब्राह्मणकाल में तो लोग वेदार्थ को बिलकुल ही भूल चुके थे। प्रत्युत इसके पूर्व साहित्यकाल में भी वेदों का अर्थ गूढ हो रहा था और वेदार्थ के द्रष्टा ऋषियों की बताई हुई वेदार्थ की चाबियाँ, पठन-पाठन से बिछड़कर खास खास व्यक्ति-विशेषों के ही पास रह गयी थीं। इस बात से क्या यह बात साफ नहीं हो जाती है कि मन्त्रद्रष्टा ऋषियों का समय लुप्त-विलुप्त साहित्य से बहुत पहले का था। मेरा पक्का विश्वास है कि मन्त्रद्रष्टा ऋषियों के कई काल (Periods) रहे होंगे। इनमें से दो कालों का (Periods) का हमें ज्ञान है। ये दौनो काल एक दूसरे से बहुत दूर दूर के हैं - दीर्घकालीन हैं। गोपथ ब्राह्मण में लिखा है :-

"तान्वा एतान् सम्पातान् विश्वामित्रः प्रथममपश्यत् तान् विश्वामित्रेण दृष्टान् वामदेवोऽसृजत।"
(गो.ब्रा. ६/१)

अर्थात् :- इन (ऋ ४/१६) ऋचाओं को पहले विश्वामित्र ने देखा, फिर इन विश्वामित्र द्वारा देखी गयी ऋचाओं को वामदेव ने देखा, परन्तु वेदो-नुक्रमणी के अनुसार इन ऋचाओं का ऋषि इस समय वामदेव ही है; विश्वामित्र नहीं हैं।

॥ व्याख्या ॥

ऋग्वेद के दशम् मण्डल के अनेक-सूक्तों का, जिस नाम का देवता है, उसी नाम का ऋषि भी है। ऋषि तो मन्त्रद्रष्टा को कहते हैं और देवता दृष्यविषयवस्तु को कहते हैं। इससे यही अनुमान पुष्ट होता है कि अति प्राचीनकाल के मन्त्रद्रष्टा अपने अपने विषय वस्तु के ही नाम से प्रसिद्धि पा लेते थे। आजकल जैसे नेता, अभिनेता, नेत्री, अभिनेत्री, नर्तकी, नर्तक, ज्योतिषी, वैज्ञानिक, आविष्कार आदि अपने नाम का ठप्पा अपने आविष्कार पर लगा देते हैं। इतिहास उन मन्त्रदृष्टा ऋषियों के वास्तविक-नामों को बिलकुल भूल चूका है। या यों कहो कि तब का इतिहासकार साहित्य लिखता था-साहित्यकार का नाम नहीं लिखता था। क्योंकि साहित्य अमर है और साहित्यकार एक मरणशील-प्राणी मात्र है।

तो भी कहीं कहीं अत्याधिक प्राचीन मन्त्रद्रष्टा ऋषियों के नाम कहीं कहीं अंकित रह गये थे जिनमें वैवस्वतमनु, नहुष और ययाति जैसे कुछ नाम शेष रह गये हैं।

इससे परिणाम यह निकलता है कि -

१- वेदकाल का प्रथम युग विस्मृत है।
२- केवल सूक्त हैं - सूक्तकार गायब है।
३ - साहित्य है - साहित्यकार अलिखित है।

प्राचीन-भारतीय-चिंतक साक्षात्कार से प्राप्त विचारों को लिखते थे पर उनपर अपने नाम का ठप्पा लगाने के बिलकुल ख़िलाफ थे।

॥ पाँचवा अता-पता ॥

मैं जैसे जैसे बोलता जाता था, मैडम का चेहरा वैसे वैसे आश्चर्ययुक्त होते होते इतिहास के उस अंध-युग में खो जाता था, जो आजतक अलिखित रह गया है।

अब मैंने इस गुत्थी को (कि वेद कितने प्राचीन हैं) एक रोचक कहानी द्वारा समझाने का यत्न किया जो कहानी तैत्तिरीय-संहिता, मैत्रायणी-संहिता और ऐतरेय ब्राह्मण में एक तरीके से ही लिखी हुई है। देखिये; वह कहानी यह है :-

॥ मूल कहानी ॥

तैत्तिरीय संहिता ३/१/९ के अनुसार :-

"मनुः पुत्रेभ्यो दायं व्यमजत्स नामानेदिष्ठं ब्रह्मचर्य बसन्तं निरमजत्स आगछत्सोऽब्रवीत् कथा मा निरमागितिनत्वा निरमाक्षमित्यब्रवदिङ्गिरस इमे सत्रमासते। ते सुवर्ग लोकं न प्रजानन्ति तेभ्य इदं ब्राह्मणं रूहि ते सुवर्ग लोकं यन्तो य येषां पशवस्तांस्ते दास्यन्तीति तदेभ्योऽब्रवीत्ते सुवर्ग लोकं यन्तो य येषां पशव आसन्तानस्मा अददुस्तं पशुभिश्चरन्तं यज्ञवास्तौ रूद्र आऽगच्छत्सोऽ ब्रवीत् मम वा इमे पशव इत्यदुर्वै।"

मैत्रायणी संहिता १/५/८ के अनुसार :-

"मनोर्वै दश जाया आसन् दशपुत्रा नवपुत्राष्टपुत्रा सप्तपुत्रा षट्पुत्रा पञ्चपुत्रा चतुष्पुत्रा त्रिपुत्रा द्विपुत्रकै पुत्रा ये नवासंस्तानेक उपसम क्रामद्येऽष्टौ तान्द्वे ये सप्ततां स्त्रयो ये षट्तांश्चत्वारोऽथ वै पञ्चैव पञ्चासंस्ता इमाः पञ्चदश त इमान्पञ्च निरमजन्यदेव किंच मनोः स्वमासीत्तस्मात्ते वै मनुमेवोपाधावन्मना अनाथन्ततेभ्य एताः समधिः प्रायछत्तामिर्वै ते तान्निरदहंस्तामिरेनान्परा भावयन्परा पाप्मानं भ्रातृव्यं

भावयति य एवं विद्वानेताः समिध आदधाति।''

ऐतरेय ब्राह्मण ५/१४ के अनुसार :-

''नामानेदिष्ठं शंसति। नामानेदिष्ठं वै मानवं ब्रह्मचर्य बसन्तं भ्रातरो निरमजत्सोऽब्रवीवेत्य किं मह्यसभाक्ते त्ये तमे वनिष्ठावमववदितारमित्यब्रू वंस्तस्मात्धाप्ये - त्तर्हि पितरं पुत्रा निष्ठा वोऽव वदतेत्येवाचक्षते। स पितरमेत्या ब्रवीत त्वां ह वाव मह्यं तता माक्षुरिति तं पिताऽ ब्रवीन्मा पुत्रक तदाह - था अङ्गिरसो वा इमे स्वर्गाय लोकाय सत्रमासते ते षष्ठं षष्ठमेवाह रागत्य मुह्यन्ति। तानेते सूक्ते षष्ठे ऽ हनि शंसय तेषां यत्सहस्रं सत्रपरिवेषणं तत्त स्वर्यन्तो दास्यन्तीति।''

॥ कथासार ॥

इन तीनों कथाओं का मूलस्वर एक ही है। इस एक कथा का सार यह है कि- ''मनु की आज्ञा से उसके पुत्रों ने उनकी सम्पत्ति बांट ली। मनु का सबसे छोटा पुत्र जिसका नाम नामानेदिष्ठ था, इस बंटवारे के समय आचार्य कुल में ही रह रहा था। घर आकर उसने अपने पिता सेअपना हिस्सा मांगा। घर में और कोई चीज शेष न थी। इसलिये पिता ने पुत्र को ''तातेन सूक्ते षष्टेऽहनि संशय'' इन सूक्तों को और ''तेभ्य इदं ब्राह्मणम्'' इस ब्राह्मण को दिया।' सर्वानुक्रमणी में लिखा है कि ''इदमित्थासप्ताधिका नामानेदिष्ठो मानवो वैश्वदेवं तत्'' अर्थात् ''इतमित्था'' प्रतीक वाले ऋग्वेद मण्डल के ६१ वें और ६२ वें सूक्त का ऋषि मनु का पुत्र नामानेदिष्ठ है।

इस कहानी से यह बात साफ हो जाती है कि हालांकि इन सूक्तों का ऋषि नामानेदिष्ठ है और ६१ वें व ६२ वें सूक्त के १८ वें मंत्र में नामानेदिष्ट का नाम भी आता है, तो भी यह दोनो सूक्त उसके बनाये हुये नहीं हैं। प्रत्युत ये सूक्त उसके पिता मनु को भी याद थे। सभी जानते हैं कि नामानेदिष्ठ वैवस्तवत मनु के दस सन्तानों में से एक है; प्रमाण देखिये -

''वेनं धृष्णुं नरिष्यन्तं नामागेक्ष्वाकुमेव च।
कारूवमध शर्यातिं तथा चैवाष्टमीलिलाम्॥
पृष्ध्रं नवमं प्राहुः छत्रधर्मपरायणम्।
नामोनेदिष्ठं दशमं मनोः पुत्रान् प्रचक्षते॥''

(महा.आ.अ. ६८)

और मनु आर्यजाति कें प्रथमपुरूष थे। वैवस्तुत मन्वन्तर के आरम्भ में उत्पन्न होने से इनका भी नाम वैवस्वत न हुआ। वेदो के सूक्त उनके समय में भी मौजूद थे इसलिये केवल वेद ही नहीं समूचा ब्राह्मण साहित्य भी तबतक उपस्थित था।

॥ वेद और विश्व ॥

वेद का केवल अपने जन्मस्थान भारतवर्ष से ही नाता नहीं है, वेद तो सम्पूर्ण विश्व के हैं। विश्व के सभी धर्म वेद से ही निकले हैं। वेद सम्पूर्ण-मानव-जाति के पथप्रदर्शक हैं। मनु के प्लावन की कहानी हर धर्म की प्रथम कहानी है। मनु की मछली और नौका एक ही तो वस्तु है। मनु से ही सूर्यवंश व चन्द्रवंश चला है, ठीक उसी प्रकार, जिस प्रकार नूह के पुत्र हेम और शेन से समस्त मानव जाति की उत्पत्ति मानी जाती है। हेमिटिक और सेमिटिक जातियाँ की ही सन्तति सारा संसार है। जिस मनु की प्राचीनता की साक्षी विश्व-इतिहास दे रहा है उस मनु के मंत्रों की अर्थात वेदों की प्राचीनता के बारे में भला कौन साक्षी न देगा ?

तनिक सोचो तो -

१. ब्राह्मणकाल, २२ हजार वर्ष पुराना है;

२. यही काल मंत्रदृष्टा ऋषियों का है;

३. प्राचीन मंत्रदृष्टा ऋषियों का काल जिनमें वैवस्वतः मनु, नहुष ययाति तथा नामानेदिष्ठ आदि आते हैं, आदि-सृष्टि के आदि काल तक जाता है।

४. और वेद इनसे भी पुराने हैं। प्राचीन और नवीन मंत्रद्रष्टाओं का समय कितना होगा, इस रहस्य का पटक्षेप मुण्डक उपनिषद् में ''तदेतत्सत्यं'' कहकर यह पद करता है -

''मंत्रेषु कर्माणि कवयो यान्यपश्यंस्तानि
त्रेतायां बहुधा सन्ततानि।
तान्याचरथ नियतं सत्यकामा एष वः पन्थाः
सुकृतस्य लोके॥'' (मु. उ. १/२/१)

अर्थात् : - वेदमंत्रों में जिन कर्मों को बड़े बड़े विद्वानों ने ढूँढ निकाला था, वे कर्म त्रेता में बहुत प्रकारके थे। उन्हीं को, हे सत्यकाम ! तू कर ! यही लोक में सुकृत्त मार्ग है।

वेद के कर्मकाण्ड का बारीक से बारीक विज्ञान, त्रेता में भी विद्वानो ने खोज डाला था। इसके दो प्रमाण हैं -

पहला; राजा जनक का यज्ञद्वारा पानी बरसाना, तथा

दूसरा; दशरथ का पुत्रोत्पन्न करना।

इन्हीं दो यजुर्वेदीय - विज्ञान को महर्षि बाल्मीकि ने अपनी रामायण में लिखा है। इससे साफ जाहिर होता है कि द्वापर में रचे गये उपनिषद् अपने से पहले साहित्य के श्लोकों को उद्धृत करके त्रेता के यज्ञ-विज्ञान की प्रशंसा करते थे। यह दोनों वेदो के अलौकिक-कार्य थे। यह त्रेता के अंत की घटना है। यौं द्वापर के १२६४००० और इस कलियुग के २०५१ वर्ष अर्थात आजतक बाल्मीकि रामायण को बने १२६८०५१ वर्ष हो चुके हैं और लगभग इतना ही पुराना वह साहित्य भी है जिसमें पुत्रेष्टि-यज्ञ तथा पानी बरसाने का वर्णन है।

* * *

मेरा यह कहना था कि मैडम मोनिला ठगी सी खड़ी रहीं और बोलीं कि संसार के बड़े से बड़े दार्शनिक यही कहते हैं कि वेदों को

बने केवल १५०० ईसा पूर्व वर्ष हुये हैं। क्या ये सभी विचारक झूठ बोलते थे।

मैं बोला-मैडम ! ये विचारक झूँठ नहीं तो भले। क्या बोलेंगे ? इनकी बुद्धि विराट नहीं, संकुचित जो है। इनका पैमाना सृष्टि का अनादित्व नहीं, इन्सान हैं। वेदों को तो वैदिक-साहित्य पढकर ही जाना जा सकता है। अनुमान यहाँ बेकार हो जाते हैं। अनुमानित-ज्ञान कहता है, कि वेद १२०० से १५०० वर्ष ईसापूर्व बने थे जो कि एक नितांत हास्यास्पद-विचार है। मैक्समूलर, मैक्डॉनल, कीथ, वृहलर, हौग, ह्विटनी, विल्सन, ग्रिफिथ, औडर, विन्टनिट्जा और जै को बी किसी ने भी वैदिक-साहित्य का क्रमबद्ध-अध्ययन नहीं किया था इसीलिये भारतीय-परम्परा इन सबके विचारों का एकसाथ बहिष्कार करती है कारण कि इनकी बाइबिल की पहुँच बहुत नीची है।

।। सूर्यसिद्धांत का साक्ष्य ।।

प्राचीन भारतीय सूर्यसिद्धांत, जिसके सहारे नया सूर्यसिद्धांत बना है, सतयुग के अंत का है। उसमें यानी नवीन सूर्यसिध्दांत १/२ में लिखा है -**''अल्पावशिष्टे कृते''** अर्थात् सतयुग के अंत में, यह सूर्यसिद्धांत बना है ! सूर्यसिद्धांत की ज्योतिष-पद्धति उसी काल की ग्रहस्थिति से शुरू की गयी है। उस समय अर्थात त्रेतायुग के आदिकाल में सबग्रह मध्यगत थे। इसीलिये जरूरत थी कि ज्योतिष का घ्रूव (ध्रुव) निश्चित कर लिया जाय और युग पहाति की जाँच भी हो जैसा सूर्य सिद्धांत में लिखा है -

''अस्मिन्कृतयुगस्यान्ते सर्वे मध्यगता ग्रहा: ।
विना तु पातमन्दोच्चान्मेषादौ तुल्यता मिता ।।

(सूर्यसिद्धांत १/५७)

''अत ऊर्ध्वममी-युक्ता गतकालाब्द संख्यया ।
मासीकृता युता मासैर्मधुथुल्कादिभिर्गते: ।।''

(सूर्यसिद्धांत १/४८)

अर्थात्- कृतयुग के अंत में सारे ग्रह मध्यगत थे। उक्त कृतयग के अंत तक के वर्षों की संख्या में इस काल के बीते हुये वर्षों को जोड़ो। पुन: जोड़को १२ से गुणा करो, तो माससंख्या होगी। यहाँ त्रेता के शुरू और कृतयुग के अंत की स्थिति से ही आरम्भ किया है।

ऊपर के श्लोकों की सहाय्यता गणित करने पर सतयुग का अंतिम दिन मंगलवार निकलता है इसलिये निर्विवाद है कि यह ग्रन्थ पहले पहल त्रेता के आदि में लिखा गया था। आजतक इसको बने हुये (त्रेता के १२९६०००, द्वापर के ८६४००० और कलियुग के आजतक ५०५१ = २१६५५१ वर्ष होते हैं। इस हिसाब से बाल्मिकि का पता १२ लाख वर्ष पूर्व और सूर्यसिद्धांत का पता २१ लाख वर्ष पूर्व तक चलता है। इसके पूर्व न जाने कितने पलटे खाकर, किस किस साहित्य के दय और अस्त होने पर, तब कहीं जाकर वेदों के प्रादुर्भाव का समय आता है। वेदो के प्राचीनतम्-मंत्रदृष्टा-ऋषियों में वैवस्तव मनु का भी नाम आता है जिन्होने अपने पुत्र को कुछ सूक्त दायमारा में दिये थे। जो अबतक उसी के नाम से चले आते हैं। ऐसी हालत में, वेदों की प्राचीनता इस ऐतिहासिक-तरीके से भी उस काल से बहुत ऊपर तक पहुँच जाती है जहाँतक पं. लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, नाना पावगी और श्री अविनाश चन्द्रदास की खोजें गयी हैं।

वैवस्वत मनु नि:सन्देह समूची मानव जाति के प्रथम पुरूष थे। उनके समय में भी वेदों का होना यही सिद्ध करता है कि वेदों का जन्म मनुष्य के जन्म के साथ साथ ही नहीं - मनुष्य के जन्म से भी पहले हो चुका था।

।। शंका-समाधान ।।

कुछ विद्वान कहते हैं कि मन्त्रदृष्टा और मंत्रकर्ता ऋषियों को ही वेदों के रचयिता बताते हैं और उनका इतिहास गढ़कर वेदो की उम्र निकालते हैं जो कि एक बड़ा विचार है।

दरअसल में वेद तो मंत्र दृष्टा ऋषियों से भी बहुत पहले विद्यमान थे। कुछ प्रमाण प्रस्तुत हैं। आप खुद सोचियेगा :-

१-गोपथ ब्राह्मण कहता है-**''विश्वामित्र: प्रथममपश्यत् । तान् विश्वामित्रेण दृष्टान् वामदेवो असृजत ।''** (६/१)

अर्थात् - सम्पात ऋचाओं के प्रथम दृष्टा विश्वामित्र थे, किन्तु अब वामदेव हैं। यदि मंत्रदृष्टा वेदों के रचनेवाले होते तो दो विरोधी समयों में एक ही सूक्त की रचना दो ऋषि भला कैसे कर सकते हैं ?

२- ऋग्वेद १०/६१ और ६२ सूक्त पहलें मनु को पता थे, पर अब उनका ऋषि मनुपुत्र नामानेदिष्ट है। जिन सूक्तों का समय नामानेदिष्ट दृष्टा ऋषि हैं, वे सूक्त उसके पिता मनु के पास पहले से ही मौजूद थे। अत: दृष्टा ऋषि मंत्रो के बनाने वाले नहीं हो सकते।

३- अनेक सूक्तों के ऋषि एक नहीं - अनेक हैं। ऋग्वेद १/१०५ के त्रित और कुत्स तथा ऋग्वेद २/२८ के गार्त्समद और गृत्समद ऋषि हैं। इसी प्रकार एक ही मंत्र के कई कई ऋषि हैं। ऋग्वेद ३/४/८ से ११ तक के मंत्रों का ऋषि विश्वामित्र है, परन्तु यहीमंत्र जब ऋग्वेद ७/२/८ से ११ तक में आते हैं तो इनका ऋषि वशिष्ठ हो जाता है। क्या इन सूक्तों को और मंत्रों को अनेक कवियों ने एकसाथ बैठकर बनाया ?

४ - ऋग्वेद ८/६६ वाले केवल एक ही सूक्त के एक सौ द्रष्टा ऋषि लिखे हैं। **''परस्वनं शतं वैखानसा:!''**

(ऋग्वेदानुक्रमाणी)

५- यदि कर्मकाण्ड के समय मंत्रकार का वरण आजकल भी होता है, जो कि वास्तव में मंत्रों का कर्ता नहीं है अत: मंत्रद्रष्टा की

ही तरह मंत्रकार का भी अर्थ मंत्र बनाने वाला नहीं है। स्वर्णकार, लोहकार आदि सोना और लोह नहीं बनाते, प्रत्युत बने हुये लोहे से अन्यकार्य करते हैं। बीनकर हमेशा बीना का बजाने वाला ही कहलता है-बनानेवाला नहीं। 'कर' शब्द कृत वस्तु के उपयोग करने वाले के ही लिये है, मूल रचना करने वाले के लिये नहीं। इसीलिये सूत्रग्रन्थों में कर्म कराने वाले को मंत्र कार कहा गया है। प्रमाण -

१. दक्षिणत उदङ्: मुखो मन्त्रकार: (मानव गृह्यसूत्र १/८/२)

२. मन्त्रकृतो वृणीते। यथर्षि मन्त्रकृतोवृणीत।

(आप.औ. २४ /५/६)

६ - मंत्रद्रष्टा और मंत्रकार, मंत्रो के रचयिता नहीं, प्रत्युत अपने अपने विषय के मन्त्रार्थों के प्रचारक और उन मंत्रों के विषय के विशेषज्ञ होते हैं। जोऋषि जिस सूक्त का या जिस मंत्र के सत्य और मार्मिक-भाव का दर्शाने वाला हुआ है वही उस मंत्र का द्रष्टा कहलाया है। यही कारण है कि एक ही सूक्त और मंत्र के समय समय पर अनेक ऋषि हुये हैं। वेदार्थ प्रकाशित करने का केवल इन्हीं को विशेषाधिकार प्राप्त था। और यही मंत्र द्रष्टा ऋषि ही वेद के सच्चे उद्धारकर्त्ता होते थे।

वेद तो ईश्वर प्रदत्त थे।

कुछ प्रमाण देखिये -

१) एतामृचमपश्यत्। (ऐ.ब्रा. २/२६)

२) एतत् कवय: सूक्त मपश्यत्। (ऐ.ब्रा. ३/१८)

३) गौरवीति एतत्सूक्तमपश्यत्। (ऐ.ब्रा. ३/१८)

४) एतां पदामपश्यत्। (ऐ. ब्रा. ४/२०)

५) ऋषिर्दर्शनात्। (निरूका २/११)

६) ऋषीणा मन्त्रद्दष्टयो भवन्ति। (उपनिषद्)

७) तदेतत् पश्यन्नृषिर्वामदेव:। (शत.ब्रा.१४/४/२/२२)

८) वदेतदृषि: पश्यन्नुवाच। (ऐ.ब्रा. ८/१)

९) द्रष्टं साम। (पाणिनि अ.)

१०) ऋषयो मन्त्रद्रष्टार:। (ऋक् प्रातिशारख्य)

११) यज्ञकाण्ड द्रष्टार: ऋषय: ऋषि शब्देनात्र मन्त्रद्रष्टार:।

(नागो जी भट्ट)

।। निष्कर्ष ।।

मेडम मोनिला। वेदो में आये हुये इन नवीन मध्यम और पुराकालीन ऋषियों के नामों से आप आँग्लविद्वानों व विदुषियों को यह भ्रान्ति जरूर होती होगी कि वेदो की रचना समय समय पर होती रहीहै परन्तु जब हम सब यह देखते हैं कि **''अग्नि: पूर्वेभिर्ऋषिमिरीड्यो नूतनैरूत, पूर्वोभिर्यो मध्यमोभिरूत नूतनेभि: इत शुश्रुम धीराणां, अन्यदेवाहुविद्यायाऽ न्यदेधाहुर विद्याया''** इत्यादि भाव के कुछ मंत्र वेदो में ही लिखे हैं तो उनको उपर्युक्त शंका होती है। पर यह शंका तब तुरन्त ही नष्ट हो जाती है जब हम समय समय पर होने वाले नये और पुंराने ऋषियों को वेद मंत्र द्रष्टा ऋषियों के साथ मिलकर देखते हैं। मंत्रदृष्टाऋषि तो समय समय पर होते ही रहते हैं इसलिये वेद में इन्हीं मंत्रदृष्टा ऋषियों के लिये नूतन, महरा और पूर्व शब्द आये हैं। यही ऋषिगण समय समय पर वेद का सच्चा मर्म खोलते हैं। इसलिये वेदों ने सचेत कर दिया है कि सभी की बात न मान लेना बल्कि नये व पुराने उन्ही ऋषियों की बात मानना जो कि मंत्रद्रष्टा हों।

मंत्रद्रष्टा ऋषियों का भी अतिप्राचीन इतिहास उपलब्ध है - वैवस्वत मनु ऐसे ही एक ऋषि थे और वेद चूंकि उनसे भीपहले से चले आ रहे हैं अत: वेद इन ऋषियों की रचना भला कैसे हो सकते हैं ?

मैंने देखा-मैडम् मोनिला विस्फोटित नेत्रों से मुझ देख रही हैं और कह रही हैं कि अबतक हम आँग्ल निवासी कितने अंधकूप में पड़े भटक रहे थे। सच है - वेदार्थ वही जान सकता है जो वेदों में प्रविष्ठ हो जाय। धन्य हैं आप जो वेदो को इतनी, सच्चाई और सफाई से समझने की अलौकिक-प्रतिभा रखते हैं। सच है; वेद परब्रह्म प्रणीत परमज्ञान के पवित्र आगार हैं।

।। विदाई -समारोह ।।

मिस मोनिला केवल एक माह (मई-१ से मई -३१) तक भारत में ठहरी थीं। एक जून १९९४ बुधवार को उन्हें हम सबने विदा किया था। जाते जाते उन्होंने मुझ से पूछा था-'वेदाध्ययन के लिये मैं आपसे पत्र व्यवहार करती रहूँगी।' मैंने कहा-'स्वीकार है पर आप से मेरा विनम्र-निवेदन यही है कि आप द्रविड़ वेद-भाष्यकारों को जिनमें वे महीधर हैं अपना आदर्श न बनायें। वे अर्थ का अनर्थ करते हैं। वेदभाष्य के लिये मैं सायणाचार्य के बाद केवल स्वामी दयानन्द सरस्वती को ही अपना आदर्श मानता हूँ। क्यौंकि वे वैदिक-साहित्य के मर्म को समझते थे। वे वैदिक-संस्कृति और संस्कारों के ज्ञाता थे। वेदों को जानना हो तो ईशावास्योपनिषद के मंत्र-७ को जानो जो कहता है :- **''यस्मिन सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद विजानत:। तत्र को मोह: क: शोक एकत्वमनुपश्यत: ।।''** मिस मोनिला स्वीकारोक्ति में खिलखिलाकर हंस पड़ीं।

नोट : इस लेखपरक-रिपोर्ट के सभी सन्दर्भों के मूल-ग्रन्थ मैंने सुप्रसिद्ध अमेरिकी-अनुसंधान कर्ती मिस मोनिला जी को दिल्ली विश्वविद्यालय सन्दर्भ विभागीय पुस्तकालयाध्यक्ष श्री जे.बी. खन्ना की सहायता से दिखा दिये थे। मिस मोनिला 'डिपार्टमैण्ट आफ इण्डोलोजी' के निमंत्रण पर भारत पधारी थीं।

- लेखक

-श्री रसिक बिहारी मंजुल

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली -११०००७